International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

Original Article

THE ROLE OF TEXTILES IN THE EXPRESSION OF FOLK ARTS: A STUDY

लाके कलाओ की अभिव्यक्ति में वस्त्रो की भूमिका: एक अध्ययन

Dr. Reetibala Bhor [1*]
[1] Assistant Professor, Home Science, Government Maharani Lakshmibai Girls Post Graduate College, Kila Bhavan, Indore, Madhya Pradesh, India

ABSTRACT

English: Folk art and textiles are two important areas of traditional cultures. That reflects the social, historical and cultural identity of local communities.
The aim of this research is to study the role of textiles in the expression of folk art.
There is deep connection between folk art and textiles. Textiles themselves are a form of folk art, created using traditional styles, techniques (such as embroidery, weaving and block printing) and natural dyes. These reflect a community's culture, beliefs and daily life. This means that clothing is not only for wearing but also serves as a medium of artistic expression, social identity and cultural heritage. This relationship reflects a confluence of creativity, functionality and tradition, where the designs on textiles (such as Madhubani and Paithani) and the processes used in their creation become an integral part of folk art.
In folk arts, painting has a deep connection with textiles. In painting, fabric is used as a canvas. Various style of painting, such as kalamkari from Andhra Pradesh, Mata ni pachedi from Gujrat and Phad from Rajesthan are specifically done on cloth.
In the art of dance, costumes also play a crucial role. Clothing enhances the dancer's movements, expresses emotions, depicts the narrative, and reflects cultural identity. In dance costumes are not merely something to wear, but an important component of the performance that makes the dance vibrant, meaningful and memorable.
Similarly, clothing plays an important role in sculptures not only enhance their beauty but also reflects the society, culture, religious beliefs and lifestyle of that period. Clothing gives the statue a recognizable form, expression and meaning.
Therefore, the study concludes that folk art and textiles are complementary to each other. Folk arts provide cultural identity and beauty to textiles, while textiles serve as a medium for the preservation and dissemination of folk arts.

Hindi: लोक कला और वस्त्र पारम्परिक संस्कृतियों के दो महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो स्थानीय समुदाय की सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्षाते है।इस शोध का उद्देष्य लोक कलाओं की अभिव्यक्ति में वस्त्रों की भूमिका का विष्लेषण करना है। लोक कला एवं वस्त्रों के बीच गहरा संबंध है । जहाँ वस्त्र स्वयं लोक कला का एक रूप है, जो पारम्परिक शैलियों, तकनीकों (जैसे कढ़ाई, बुनाई, ब्लॉक प्रिंटिंग) और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके बनाये जाते है। यह किसी समुदाय की संस्कृति, विष्वासों और रोजमर्रा की जिंदगी को दर्षाते है। यानि वस्त्र केवल पहनने के लिये नहीं, बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति, सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक विरासत के वाहक भी होते है। यह संबंध रचनात्मकता, कार्यक्षमता और परम्परा के संगम को दर्षाता है, जहाँ वस्त्रों पर बनी डिजाईन (जैसे मधुबनी, पैंठणी) और उनके निर्माण की प्रक्रियाएं लोक कला के अभिन्न अंग बन जाती है।लोक कलाओं के अंतर्गत चित्रकला का वस्त्र से गहरा संबंध रहा है। चित्रकला में वस्त्र केनवास के रूप में प्रयोग किया जाता है । चित्रकला की शैलिया जैसे आन्ध्रप्रदेष की कलमकारी, गुजरात की माता नी पचेड़ी और राजस्थान का फड़ विषेष रूप से कपड़े पर की

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Reetibala Bhor (rakeshbhor@gmail.com)

Received: 26 December 2025; **Accepted:** 28 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6731
Page Number: 249-254
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

जाती है।नृत्य कला में भी वस्त्र एक अहम स्थान रखते है। वस्त्र नर्तक की गतिविधियों को बढ़ाते, भावनाओं को व्यक्त करते, कथानक को दर्षाते और सांस्कृतिक पहचान बताते है। नृत्य में वस्त्र केवल पहनने की चीज नहीं बल्कि प्रदर्षन का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो नृत्य को जीवंत, अर्थपूर्ण और यादगार बनाते है। इसी प्रकार मूर्ति कला में भी वस्त्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूर्तियों में अंकित या प्रदर्षित वस्त्र न केवल सौंदर्य को बढ़ाते है, बल्कि उस काल के समाज, संस्कृति, धार्मिक विष्वास और जीवन शैली को भी अभिव्यक्त करते है। वस्त्र मूर्ति को पहचान, भाव और अर्थ प्रदान करते है। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि लोक कला और वस्त्र परस्पर एक दूसरे के पूरक है। लोक कलाएं वस्त्रों को सांस्कृतिक पहचान और सौंदर्य प्रदान करती है, जबकि वस्त्र लोक कलाओं के संरक्षण और प्रसार का माध्यम बनते है।

Keywords: Folk Arts, Clothing, Expression, लोक कलाएं, वस्त्र, अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना

लोक कलाएं किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। भारत जैसे विविधताओं से भरपूर देष मंे लोक कला-नृत्य, संगीत, चित्रकला नाटक के रूपों में वस्त्रों का महत्व केवल पहनावे तक सीमित नहीं है बल्कि यह प्रतीकों, सामाजिक समुदाय की पहचान और सांस्कृतिक भावों का भी संवाहक है। वस्त्रों के माध्यम से लोक कलाओं की परम्पराऐं, विष्वास, रीति रिवाज, सामाजिक पहचान और प्रतीकात्मक अर्थ व्यक्त किये जाते है।

लोक कला की अवधारणा एवं महत्व

लोक कला वह कला है जो आम लोगों व्दारा पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित होती है। यह अक्सर पारम्परिक कथा, लोक विष्वास और सामुदायिक जीवन शैली से प्रभावित होती है । उदाहरण - मधुबनी, चित्रकला, वारली, थेप्पा आदि शामिल है। लोक कला सामाजिक जीवन, उत्सव, मान्यताओं और लोक धार्मिक गतिविधियों के साथ गहरे रूप में जुड़ी है।

संक्षेप में लोक कला जनजीवन का दर्पण होती है, जो किसी समाज के दिल की धड़कन और उसकी अनूठी संस्कृति को कला के रूप में प्रस्तुत करती है।

वस्त्र-दो धागों से बुनकर बनायी गयी संरचना वस्त्र कहलाती है।

शोध का उद्देष्य

1) लोक कलाओं में वस्त्रों की भूमिका का विष्लेषण करना।
2) वस्त्रों के प्रतीकात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थो की पहचान करना ।
3) लोक कलाओं और वस्त्रों के मध्य अंतर्संबंध की व्याख्या करना ।

साहित्य का पुनरावलोकन

1) लोक कला एवं वस्त्र का सांस्कृतिक महत्व- लोक कला समुदाय आधारित परम्पराओं से जन्म लेती है और वस्त्र इसी सांस्कृतिक धरोहर का सक्रिय घटक है। वस्त्र किसी समुदाय की पहचान, स्थिति, अवसर, आयु वर्ग और भौगोलिक विषेषताओं को सूचित करते है।
2) पारम्परिक वस्त्रों के अर्थ और प्रतीक- अनेक शोधों में वर्णित है कि पारम्परिक वस्त्रों पर उकेरे गये रंग, बनावट, मोटिफ समाज की धार्मिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक प्रतिक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते है। जैसे असम के तंूर्इं समुदाय के वस्त्रों पर विषिष्ट रंग और डिजाईन उनके मिथक, प्रकृति और सामाजिक संबंधों को परिलक्षित करते हैं ।
3) लोक कला एवं समकालीन परिधानों में पारम्परिक तत्वों का समन्वय- कुछ शोधों में यह पाया गया है कि आधुनिक परिधानों में स्थानीय कला के तत्वों का समावेष सांस्कृतिक पहचान को नई पीढ़ी तक पहुँचने का माध्यम बन चुका है। यह न सिर्फ सांस्कृतिक संरक्षण का साधन है, बल्कि ग्रामीण कारीगरों को आर्थिक अवसर भी देता हैं ।

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक शोध है जिसमें निम्न विधियों का उपयोग किया गया हैः-

1) साहित्य विष्लेषण- शोध पत्र, जर्नल, लेखों की समीक्षा।
2) क्षेत्रीय संदर्भ अध्ययन- विविध लोक परिधानों का सांस्कृतिक विष्लेषण।
3) प्रतीकात्मक विष्लेषण-वस्त्रों पर उपयोग हुए डिजाईनों, रंगों और रूपांकनों की व्याख्या करना।

लोक कलाओं में वस्त्रों की भूमिका का विष्लेषण-

1) सांस्कृतिक पहचान का वाहकः वस्त्र किसी क्षेत्र विषेष की भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान को दर्षाते है। जैसे- राजस्थान की लोक कलाओं में बंधेज, लहरिया, गुजरात में पटोला, बंगाल में कांथा तथा मध्य प्रदेष में चंदेरी और महेष्वरी वस्त्र वहाँ की लोक संस्कृति को सषक्त रूप में प्रस्तुत करते है। यह वस्त्र लोक नृत्य, लोक नाट्य और पर्व त्यौहारों में सांस्कृतिक प्रतीक बन जाते है। वस्त्रों पर चित्रित मोटिफ जैसे-सूर्य, चंद्र, पशु आदि एक विषिष्ट सामाजिक विष्वास या सांस्कृतिक धारणा को प्रतिबिंबित करते है।

पारम्परिक परिधान जैसे राजस्थानी घाघरा चोली या मेघालय के जैतिया परिधान एक समुदाय की अनूठी पहचान और उनके गौरव का प्रतीक है। वस्त्रों के माध्यम से एक पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत को दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है, जिससे पहचान कायम रहती है।

पारम्परिक वस्त्र महज कपड़ा नहीं होते, ये एक कहानी है जिसे आप पहन सकते है। विष्वभर में वस्त्र सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में कार्य करते है। हर सिलाई में इतिहास और मूल्य समाहित होते है। रंग, पैटर्न और सामग्रिया अक्सर अपनी कहानियाँ बयां करती है।

2) सामाजिक और पारिवारिक संरचना का संकेत- प्राचीन काल से ही वस्त्र आर्थिक स्थिति और सामाजिक पदानुक्रम को दर्षाते रहे है। ये पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ करते है, त्यौहारों और रीति रिवाजों में एकता प्रदर्षित करते है और पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत को हस्तांतरित करते है।

विवाह, त्यौहार और पारिवारिक अनुष्ठानों (जैसे पूजा) में पहने जाने वाले विषेष वस्त्र पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी तक संस्कृति को हस्तांतरित करते है। एक जैसे कपड़े पहनना विषेष रूप से शादियों या उत्सवों में परिवार के सदस्यों के बीच एकता और भावनात्मक जुड़ाव को सुदृढ़ करता है।

3) लोक कलाओं में रंगों और प्रतीकों की अभिव्यक्ति- लोक वस्त्रों में प्रयुक्त रंग और आकृतियां विषेष अर्थ रखती है। लाल, पीला, हरा जैसे रंग उल्लास, ऊर्जा और प्रकृति के प्रतीक है। वस्त्रों पर बने लोक प्रतीक-पशु, पक्षी, पेड़, देवी देवता लोक विष्वासों और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करते है।

मधुबनी, वारली, पिथोरा जैसी लोक चित्र कलाओं का प्रभाव वस्त्र सज्जा में स्पष्ट दिखाई देता है।

लोक कलाओं एवं वस्त्रों के मध्य अतंर्संबंधों की व्याख्या-

1) **चित्रकला का वस्त्रों से संबंध-** चित्रकला का वस्त्र से गहरा संबंध रहा है, क्योंकि वस्त्र सदियों से चित्रकला के महत्वपूर्ण माध्यम रहे है, जहाँ दीवारों के अलावा कपड़े पर भी कलमकारी, फड़ और माता नी

पचेड़ी जैसी शैलियों में धार्मिक कथाएं, पौराणिक दृष्य और लोक कथाएं चित्रित की जाती थी, जिससे वस्त्र न केवल सजावट का साधन बल्कि कहानी कहने का एक जीवंत माध्यम बन गए।

चित्रकला में वस्त्र केनवास के रूप में प्रयोग किया जाता है । इसमें बनी चित्रकारी लचीली होती होती है जिसे आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है। चित्रकला के अंतर्गत विभिन्न शैलियँ जो मुख्य रूप से कपड़े पर की जाती है जैसे

1) आंधप्रदेष और तमिलनाडु की कलमकारी- यह कला पेन से कपड़ो पर की जाती है जिसमें रामायण और महाभारत के दृष्य चित्रित होते है।
2) गुजरात की माता नी पचेड़ी- इस कला के अंतर्गत मंदिरों के लिये देवी देवताओं के चित्र वस्त्र पर बनाये जाते है।
3) राजस्थान का फड़- एक लम्बी कपड़े की पट्ट पर लोक देवताओं की वीरता की कहानियँ सुनाने के लिये किया जाता है।

चित्र 1

चित्र 1 आंधप्रदेष की कलमकारी

चित्र 2

चित्र 2 गुजरात की माता नी पचेड़ी

चित्र 3

चित्र 3 राजस्थान का फड

2) **नृत्य कला का वस्त्रों से संबंध**: नृत्य ओर वस्त्र का गहरा संबंध है जहाँ वस्त्र नर्तक की गतिविधियों को बढ़ाते, भावनाओं को व्यक्त करते, कथानक को दर्षाते और सांस्कृतिक पहचान बताते है। वस्त्र नर्तक के षरीर का विस्तार बनकर गति को दृष्यमान बनाते है और प्रदर्षन का भावनात्मक प्रभाव बढाते है, जिससे यह कला का एक अभिन्न अंग बन जाता हैं। वस्त्रों के रंग, बनावट और डिजाईन दर्षकों का ध्यान आकर्षित करते है और उन्हें प्रदर्षन में बांधे रखते है, जैसे भरतनाट्यम में पारम्परिक साड़ी का घाघरा और आभूषण नर्तकी की सुदंरता और गरीमा को बढ़ाते है जबकि कत्थक की पोषाकें घूमने और कदमों की लय पर जोर देती हैं।

नृत्य में वस्त्र केवल पहनने की चीज नहीं बल्कि प्रदर्षन का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो नृत्य को जीवंत अर्थपूर्ण और यादगार बनाते हैं।

चित्र 4

चित्र 4 कुचुपुडी नृत्य

3) **मूर्ति कला का वस्त्रों से संबंध:** मूर्तियों में अंकित या प्रदर्षित वस्त्र न केवल सौंदर्य को बढ़ाते है बल्कि उस काल, समाज, संस्कृति, धार्मिक विष्वास और जीवन शैली को भी अभिव्यक्त करते हैं । मूर्ति कला में वस्त्रों का सौंदर्यात्मक संबंध होता हैं। मूर्ति में वस्त्रों की रेखाएं, सिलवटें, बनावट और मूर्ति की गतिषीलता, संतुलन और भावाभिव्यक्ति को सषक्त करती हैं। गुप्तकालीन मूर्तियों में पारदर्षी और सूक्ष्म वस्त्रांकन इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

मूर्ति में दर्षाए गये वस्त्र उस युग की सामाजिक संरचना, वर्गभेद पेषा और परम्पराओं को दर्षाते हैं। देवी देवताओं के वस्त्र दिव्यता, राजसी गरिमा या तपस्वी भाव को प्रकट करते है, जबकि लोक या मानव मूर्तियों में दैनिक जीवन के वस्त्र दिखाई देते हैं। जैन और बौद्ध मूर्तियों में वस्त्रों की सादगी आध्यामिक शुद्धता को दर्षाती हैं।

मूर्ति कला एव वस्त्रे का संबंध केवल सजावटी नही बल्कि गहन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सौदर्यात्मक हैं। वस्त्र मूर्ति को पहचान, भाव और अर्थ प्रदान करते हैं। वहीं मूर्ति कला वस्त्र परम्परा को स्थायित्व और कलात्मक अभिव्यक्ति देती हैं।

4) **षिल्प और हस्तकला से वस्त्रों का संबंधः** लोक वस्त्रकला हस्तकला से गहराई से जुड़ी है। हाथ से कताई, बुनाई, रंगाई और कढ़ाई ये सभी लोक षिल्प की परम्पराओं को जीवित रखते हैं। फुलकारी, कच्छ की कढ़ाई, सुजनी, कष्मीरी कढ़ाई जैसे वस्त्र लोक कला की सृजनात्मक अभिव्यक्ति हैं।

चित्र 5

चित्र 5 हस्तकला

निष्कर्ष

लोक कलाओं की अभिव्यक्ति में वस्त्र एक सषक्त दृष्य भाषा के रूप में कार्य करते है वे लोक जीवन, परम्परा सौंदर्य और भावनाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी सम्प्रेषित करते हैं। इस प्रकार वस्त्र लोक कला की आत्मा हैं, जो संस्कृति को जीवंत और निरंतर बनाये रखते हैं।

प्रतिकात्मकता और भावाभिव्यक्तिः लोक कलाओं में निहित भाव, आस्था और प्रतीक वस्त्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचती हैं। विवाह, त्यौहार और धार्मिक अनुष्ठान में प्रयुक्त वस्त्र लोक कला की भावनात्मक अभिव्यक्ति को दर्षाते है।

संरक्षण एवं निरंतरताः वस्त्रों में लोक कलाओं के प्रयोग से इन कलाओं का संरक्षण होता है तथा नई पीढ़ी तक इनकी परम्परा पहुँचती हैं। आधुनिक फैषन में लोक कला के तत्वों का समावेष इसे समकालीन स्वरूप प्रदान करता हैं।

लोक वस्त्र सिर्फ फैषन या परिधान नहीं है वे सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रतीकात्मक तत्वों का जीवंत स्त्रोत है। इन्हें समझने से समाज की परम्पराएं, विष्वास और लोक भावनाओं की गहन समझ प्राप्त होती हैं। आधुनिकता के साथ भी लोक वस्त्रों की सांस्कृतिक भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।

अतः इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि लोक कलाएं और वस्त्र परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। लोक कलाएं वस्त्रों को सांस्कृतिक पहचान और सौंदर्य प्रदान करती है जबकि वस्त्र लोक कलाओं के संरक्षण और प्रसार का माध्यम बनते है। इस प्रकार दोनों के मध्य अंतर्संबंध भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जीवंत और सषक्त बनाएं रखता हैं।

REFERENCES

Creative Expression of Native Folk Art. (2019). In Proceedings of the 2nd International Conference on Modern Research in Social Sciences. Deimantas Publishing.

Government of India, Department of Agriculture and Cooperation. (n.d.). Handicraft Survey Report (हस्तशिल्प सर्वेक्षण रिपोर्ट). Government Publication, n.v.(n.i.), n.p.

Mishra, S. (2019). Traditional Clothing and Cultural Identity (पारम्परिक वस्त्र और सांस्कृतिक पहचान)..

Panday, S. (2022). Synchronization of Folk Art in Modern Indian Dress. Research Review International Journal of Multidisciplinary, 7(1). RR Journals. https://doi.org/10.31305/rrijm.2022.v07.i01.011

Rabha, A. (2024). Significance of Traditional Costume, Clothing, and its Motif in the Rabha Society. Shodhkosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5(1), 1349–1364. Granthalayah Publication. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.1574

Singh, R. (2020). Tradition of Indian Folk Art (भारतीय लोक कला की परम्परा).

Wikipedia contributors. (n.d.). Poothamkali – Folk Dance Costumes and Role. Wikipedia. Retrieved Month Day, Year, from

Yadav, M., and Singh, R. (2025). The Relevance of Folk Arts and Textures in Contemporary Fashion Innovations. International Journal for Research Trends in Social Science and Humanities, 16(1). https://doi.org/10.52783/eel.v16i1.4115